काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

के

संस्थापक पं० मदनमोहन मालवीयजी

का धर्मोपदेश

मालवीय भवन
पुस्तकालय
का० हि० वि०
वाराणसी-221005

आविर्भाव
२५-१२-१८६१

तिरोभाव
१२-११-१९४६

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नाऽपुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

मुझे न तो राज्य की कामना है और न स्वर्ग की और न मैं पुनर्जन्म से ही मुक्ति चाहता हूँ। दुःख से पीड़ित प्राणियों के कष्ट दूर करने में मैं सहायक हो सकूँ, यही मेरी कामना है।

हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक
महामना पं० मदनमोहन मालवीयजी
के ११९ वें जन्मदिवस-समारोह पर वितरणार्थ प्रकाशित।

प्रथम संस्करण–१९५६
द्वितीय संस्करण–१९७९

प्रकाशक :
कुलसचिव
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

'धर्मो रक्षति रक्षितः'

जो दृढ़ राखै धर्म को तेहि राखै करतार।

पं० मदनमोहनमालवीयकृतः

हिन्दूधर्मोपदेशः

संघे शक्तिः कलौ युगे।

हिताय सर्वलोकानां निग्रहाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय प्रणम्य परमेश्वरम् ॥१॥

ग्रामे ग्रामे सभा कार्या ग्रामे ग्रामे कथा शुभा।
पाठशाला मल्लशाला प्रतिपर्वमहोत्सवः ॥२॥

अनाथाः विधवाः रक्ष्याः मन्दिराणि तथा च गौः।
धर्म्यं सङ्कटनं कृत्वा देयं दानं च तद्धितम् ॥३॥

स्त्रीणां समादरः कार्यो दुःखितेषु दया तथा।
अहिंसका न हन्तव्या आततायी वधार्हणः ॥४॥

अभयं सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यं धृतिः क्षमा।
सेव्यं सदाऽमृतमिव स्त्रीभिश्च पुरुषैस्तथा ॥५॥

कर्मणां फलमस्तीति विस्मर्तव्यं न जातुचित्।
भवेत् पुनः पुनर्जन्म मोक्षस्तदनुसारतः ॥६॥

स्मर्तव्यः सततं विष्णुः सर्वभूतेष्ववस्थितः।
एक एवाऽद्वितीयो यः शोकपापहरः शिवः ॥७॥

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम्।
दैवतं देवतानां च लोकानां योऽव्ययः पिता ॥८॥

सनातनीयाः सामाजाः सिक्खाः जैनाश्च सौगताः।
स्वे स्वे कर्मण्यभिरताः भावयेयुः परस्परम् ॥९॥

विश्वासे दृढता स्वीये परनिन्दाविवर्जनम् ।
तितिक्षा मतभेदेषु प्राणिमात्रेषु मित्रता ॥१०॥

श्रूयतां धर्मसर्वस्वं श्रुत्वा चाप्यवधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ॥११॥

यदन्यैर्विहितं नेच्छेदात्मनः कर्म पुरुषः ।
न तत्परस्य कुर्वीत जानन्नप्रियमात्मनः ॥१२॥

जीवितं यः स्वयं चेच्छेत् कथं सो ऽन्यं प्रघातयेत् ।
यद्यदात्मनि चेच्छेत तत्परस्यापि चिन्तयेत् ॥१३॥

न कदाचिद्बिभेत्वन्यान्न कंचन विभीषयेत् ।
आर्यवृत्तिं समालम्ब्य जीवेत्सज्जनजीवनम् ॥१४॥

सर्वे च सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥१५॥

इत्युक्तलक्षणा प्राणिदुःखध्वंसनतत्परा ।
दया बलवतां शोभा न त्याज्या धर्मचारिभिः ॥१६॥

पारसीयैर्मुसल्मानैरीसाईयैर्यहूदिभिः ।
देशभक्तैर्मिलित्वा च कार्या देशसमुन्नतिः ॥१७॥

पुण्योऽयं भारतो वर्षो हिन्दुस्थानः प्रकीर्तितः ।
वरिष्ठः सर्वदेशानां धनधर्मसुखप्रदः ॥१८॥

गायन्ति देवाः किल गीतकानि,
धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे ।
स्वर्गापवर्गस्य च हेतुभूते,
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ॥१९॥

मातृभूमिः पितृभूमिः कर्मभूमिः सुजन्मनाम् ।
भक्तिमर्हति देशोऽयं सेव्यः प्राणैर्धनैरपि ॥२०॥

चातुर्वर्ण्यं यत्र सृष्टं गुणकर्मविभागशः ।
चत्वार आश्रमाः पुण्याः चतुर्वर्गस्य साधकाः ॥२१॥

उत्तमः सर्वधर्माणां हिन्दूधर्मोऽयमुच्यते ।
रक्ष्यः प्रचारणीयश्च सर्वलोकहितैषिभिः ॥२२॥

कलियुग में एकता ही में शक्ति है

परमेश्वर को प्रणाम कर सब प्राणियों के उपकार के लिये बुराई करने वालों को दबाने और दण्ड देने के लिये, धर्म स्थापना के लिये, धर्म के अनुसार सङ्गठन कर गाँव-गाँव में सभा करनी चाहिए। गाँव-गाँव में पाठशाला खोलनी चाहिये। गाँव गाँव में अखाड़ा खोलना चाहिये और पर्व पर्व पर मिल कर बड़ा उत्सव मनाना चाहिये।

सब भाइयों को मिल कर अनाथों की, विधवाओं की, मन्दिरों की और गौ माता की रक्षा करनी चाहिए और इन सब कामों के लिए दान देना चाहिये।

स्त्रियों का सम्मान करना चाहिये। दुखियों पर दया करनी चाहिये। उन जीवों को नहीं मारना चाहिये, जो किसी पर चोट नहीं करते। मारना उनको चाहिये जो आततायी हों अर्थात् जो स्त्रियों पर या किसी दूसरे के धन, धर्म या प्राण पर वार करते हों या जो किसी के घर में आग लगाते हों। यदि ऐसे लोगों को मारे बिना अपना या दूसरों का धर्म प्राण या धन न बच सके तो उनको मारना धर्म है।

स्त्रियों को भी, पुरुषों को भी निडरपन, सचाई, अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य, धीरज और क्षमा का अमृत के समान सदा सेवन करना चाहिये।

इस बात को कभी न भूलना चाहिये कि भले कर्मों का फल भला और बुरे कर्मों का फल बुरा होता है और कर्मों के अनुसार ही प्राणी को बार-बार जन्म लेना पड़ता है या मोक्ष मिलता है।

घट घट में बसने वाले भगवान् विष्णु—सर्वव्यापी ईश्वर का सुमिरन सदा करना चाहिये, जिसके समान दूसरा कोई नहीं है, जो एक ही है और अद्वितीय है अर्थात् जिसका कारण कोई दूसरा

मालवीय भवन
पु... ...य
... पू०
वाराणसी-221005

नहीं है और जो दुःख और पाप का हरने वाला शिव स्वरूप है, जो सब पवित्र वस्तुओं से अधिक पवित्र, जो सब मङ्गलकर्मों का मंगल स्वरूप है, जो सब देवताओं का देवता है और जो समस्त संसार का आदि सनातन अजन्मा अविनाशी पिता है।

सनातनधर्मी, आर्यसमाजी, ब्रह्मसमाजी, सिक्ख, जैन और बौद्ध आदि सब हिन्दुओं को चाहिए कि अपने अपने विशेष धर्म का पालन करते हुए एक दूसरे के साथ प्रेम और आदर से वर्तें।

अपने विश्वास में दृढ़ता, दूसरे की निन्दा का त्याग, मतभेद में (चाहे वह धर्मसम्बन्धी हो या लोकसम्बन्धी) सहनशीलता, और प्राणिमात्र से मित्रता रखनी चाहिये।

सुनो धर्म के सर्वस्व को। सुनकर इसके अनुसार आचरण करो। जो काम अपने को बुरा या दुखदायी जान पड़े उसको दूसरे के साथ मत करो।

मनुष्य को चाहिए कि जिस काम को वह नहीं चाहता है कि कोई दूसरा उसके साथ करे, उस काम को वह भी किसी दूसरे के प्रति न करे, क्योंकि वह जानता है कि यदि उसके साथ कोई ऐसी बात करता है जो उसको प्रिय नहीं है, तो उसको पीड़ा पहुँचती है।

जो चाहता है कि मैं जीऊँ, वह कैसे दूसरे के प्राण हरने की इच्छा कर सकता है। जो जो बात मनुष्य अपने लिये चाहता है, वही उसको दूसरों के लिए भी सोचनी चाहिये।

कोई किसी से न डरे, और न किसी को डर पहुँचावे। श्रेष्ठ पुरुषों की वृत्ति में दृढ़ रहते हुए ऐसा जीवन बितावे जैसा सज्जन को बिताना चाहिये।

हर एक को उचित है कि वह चाहे कि सब लोग सुखी रहें, सब नीरोग रहें, सब का भला हो। कोई दुःख न पावे। प्रणियों के दुःख को दूर करने में तत्पर यह दया बलवानों की शोभा है। धर्म के अनुसार चलने वालों को कभी इसका त्याग नहीं करना चाहिए।

देश की उन्नति के कामों में जो पारसी, मुसलमान, ईसाई, यहूदी देशभक्त हों उनके साथ मिलकर भी काम करना चाहिये।

यह भारतवर्ष जो हिन्दुस्तान के नाम से प्रसिद्ध है बड़ा पवित्र देश है। धन, धर्म और सुख का देने वाला यह देश सब देशों से उत्तम है।

देवता भी यह गीत गाते हैं कि वे लोग धन्य हैं जिनका जन्म इस भारत भूमि में होता है, जिसमें जन्म लेकर मनुष्य स्वर्ग का सुख और मोक्ष दोनों को पा सकता है।

यह हमारी मातृ-भूमि है, यह हमारी पितृ-भूमि है। जो लोग सुजन्मा हैं—जिनके जीवन बहुत अच्छे हुए हैं, राम, कृष्ण, बुद्ध आदि महापुरुषों के, आचार्यों के, ब्रह्मर्षियों और राजर्षियों के, गुरुओं के, धर्मवीरों के, शूरवीरों के, दानवीरों के, स्वतन्त्रता के प्रेमी देश-भक्तों के उज्ज्वल कामों की यह कर्म-भूमि है। इस देश में हमको परम भक्ति करनी चाहिये और प्राणों से और धन से भी इसकी सेवा करनी चाहिये।

जिस धर्म में परमात्मा ने गुण और कर्म के विभाग से ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र ये चार वर्ण उपजाये और जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों के साधन में सहायक मनुष्य का जीवन पवित्र बनाने वाले ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास ये चार आश्रम स्थापित हैं। सब धर्मों से उत्तम, इस धर्म को हिन्दू धर्म कहते हैं। जो लोग सारे संसार का उपकार चाहते हैं उनको उचित है कि इस धर्म की रक्षा और इसका प्रचार करें।

नित्य की उपासना

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसंनिविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः॥

प्रतिदिन सूर्य के उदय और अस्त होने के समय प्रत्येक पुरुष और स्त्री को प्रातःकाल स्नान कर और सायंकाल हाथ मुँह पैर धोकर सूर्य के सामने खड़े होकर सूर्य मण्डल में विराजमान सारे

जगत् के प्राणियों के आधार परमेश्वर परब्रह्म नारायण को 'ॐ नमो नारायण' इस मन्त्र से अर्घ देकर और जल न मिले तो यों ही हाथ जोड़ कर मन को पवित्र और एकाग्र कर श्रद्धा-भक्ति पूर्वक १०८ बार या २८ बार या कम से कम दस बार प्रातःकाल 'ॐ नमो नारायण' इस मन्त्र को जपना चाहिए और जप के उपरान्त परमात्मा का ध्यान कर नीचे लिखी प्रार्थना करनी चाहिये।

महामना द्वारा निर्मित प्रार्थना

सब देवन के देव प्रभु सब जग के आधार।
दृढ़ राखौ मोहि धर्म में बिनवौं बारम्बार॥
चन्दा सूरज तुम रचे रचे सकल संसार।
दृढ़ राखौ मोहि सत्य में बिनवौं बारम्बार॥
घट घट तुम प्रभु एक अज अविनाशी अविकार।
अभयदान मोहिं दीजिये बिनवौं बारम्बार॥
मेरे मन मन्दिर बसौ करौ ताहि उँजियार।
ज्ञान भक्ति प्रभु दीजिये बिनवौं बारम्बार॥
सत चित आनन्द घन प्रभू सर्व शक्ति आधार।
धनबल जनबल धर्मबल दीजे सुख संसार॥
पतित उधारन दुख हरन दीन बन्धु करतार।
हरहु अशुभ शुभ दृढ़ करहु बिनवौं बारम्बार॥
जिमि राखे प्रहलाद को लै नृसिंह अवतार।
तिमि राखौ अशरण शरण बिनवौं बारम्बार॥
पाप दीनता दरिदता और दासता पाप।
प्रभु दीजे स्वाधीनता मिटै सकल संताप॥
नहिं लालच बस लोभ बस नाहीं डर बस नाथ।
तजौं धरम, वर दीजिये रहिय सदा मम साथ॥
जाके मन प्रभु तुम बसौ सो डर कासौ खाय।
सिर जावै तो जाय प्रभु मेरो धरम न जाय॥
उठौं धर्म के काम में उठौं देश के काज।
दीन बन्धु तव नाम लै नाथ राखियो लाज॥

मानवमात्र को मालवीयजी का उपदेश

घट घट व्यापक राम जप रे
मत कर बैर, झूठ मत भाखै
मत पर धन हर, मत मद चाखै
जीव मत मार, जुवा मत खेलै
मत पर तिय लख, यहि तेरो तप रे
घट घट व्यापक राम जप रे

नीचे लिखे स्वनिर्मित श्लोक से मालवीयजी विद्यार्थियों को आशीर्वाद दिया करते थे :—

सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथविद्यया।
देशभक्त्यात्मत्यागेन सम्मानार्हः सदा भव॥

अर्थात् सत्य, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, विद्या, देशभक्ति और आत्मत्याग द्वारा सदा ही सम्मान पाने योग्य बनो।

——o——

कुल-गीत

मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी।
यह तीन लोकों से न्यारी काशी।
सुज्ञान धर्म और सत्यराशी॥
बसी है गङ्गा के रम्य तट पर, यह सर्वविद्या की राजधानी।
मधुर०—॥

नये नहीं हैं यह ईंट पत्थर।
है विश्वकर्मा का कार्य सुन्दर॥
रचे हैं विद्या के भव्य मन्दिर, यह सर्व सृष्टी की राजधानी।
मधुर०—॥

यहाँ की है यह पवित्र शिक्षा।
कि सत्य पहले फिर आत्म-रक्षा॥
बिके हरिश्चन्द्र थे यहीं पर, यह सत्यशिक्षा की राजधानी।
मधुर०—॥

वह वेद ईश्वर की सत्यवानी।
बनें जिन्हें पढ़ के ब्रह्मज्ञानी॥
थे व्यास जी ने रचे यहीं पर, यह ब्रह्म-विद्या की राजधानी।
मधुर०—॥

वह मुक्तिपद को दिलानेवाले।
सुधर्म पथ पर चलानेवाले॥
यहीं फले फूले बुद्ध शङ्कर, यह राज-ऋषियों की राजधानी।
मधुर०—॥

सुरम्य धाराएँ वरुणा अस्सी।
नहाये जिनमें कबीर तुलसी॥
भलाहो कविता का क्यों न आकर, यह वाग्विद्या की राजधानी।
मधुर०—॥

विविध कला अर्थशास्त्र गायन।
गणित खनिज औषधि रसायन॥
प्रतीचि-प्राची का मेल सुन्दर, यह विश्वविद्या की राजधानी।
मधुर०—॥

यह मालवी की है देशभक्ति।
यह उनका साहस यह उनकी शक्ति॥
प्रगट हुई है नवीन होकर, यह कर्मवीरों की राजधानी।
मधुर मनोहर अतीव सुन्दर, यह सर्वविद्या की राजधानी॥

——०——